भूमिका

चलचित्र के जन्म की पूर्वपीठिका का बीजारोपण लिपि के आविष्कार के साथ ही मानव मस्तिष्क में हो चुका था। यदि लिपि अभिव्यक्ति को स्थापित करने का आरंभ है तो रिकॉर्डिंग मीडिया उसका चरमोत्कर्ष। रिकॉर्डिंग मीडिया ने अन्य कलाओं से जुड़ कर नई कला के रूप में सिनेमा को विकसित किया। आज सिनेमा एक विकसित कला के रूप में मनोरंजन और ज्ञान का सशक्त माध्यम बन गया है। सिनेमा ने सभी कलाओं के गुणों व तत्वों को स्वयं में समाहित कर अपना विशिष्ट शिल्प निर्मित किया है जिसकी अपनी दृश्य-श्रव्य भाषा है। शिल्प अमूर्त अनुभूति को मूर्त करने का तरीका है कलात्मक अभिव्यति के विभिन्न माध्यमों में प्रकट होता है जिसे कलाकार कला शिल्प के माध्यम से अपनी अनुभूति को व्यक्त करता है।

रचना निर्माण में जिन उपादानों की सहायता ली जाती है वे सभी शिल्प के अंतर्गत आते हैं। पटकथा, अभिनय प्रस्तुति, सिनेमेटोग्राफी, संपादन, साउंड डिजाइन, गीत-संगीत-नृत्य, सेट डिजाइन, ग्राफिक एवं एनीमेशन डिजाइन आदि उपादानों का समायोजित रूप सिनेमाई शिल्प के रूप में प्रस्तुत होता है। सिनेमाई शिल्प जितना उत्कृष्ट होगा विषय की प्रस्तुति भी उतनी ही प्रभावी होगी। आज फिल्म कल्पना से भी आगे रचित कहानियों को चित्रित करने में सफल हुआ है जो कि सिनेमाई शिल्प के विकास से ही संभव हो सका है। पचास का दशक श्वेत-श्याम फिल्मों के लिए जाना जाता रहा है। उस समय के सिनेमा का शिल्प आज की तुलना में बहुत ज्यादा विकसित नहीं दिखाई देता, फिर भी विषय की प्रस्तुति के लिए सिनेमाई शिल्प में उस समय अनेक प्रयोग हुए जो आज भी फिल्म निर्माता और सिनेमा के विद्यार्थियों को आकर्षित करती है। शिल्प के बदलाव का नेतृत्व गुरुदत्त ने किया और सिनेमा के शिल्प को एक नया आयाम दिया। इनकी फिल्में सिनेमाई शिल्प की बेजोड़ नमूना हैं।

सिनेमा के प्रति अपने रुझान की बात करते ही बचपन के वे दिन आज भी याद आते हैं जब मुहल्ले के विडियों सेंटर पर एक रुपये में फिल्में देखा करते थे। बचपन से ही सिनेमा ने अपनी ओर इस कदर आकर्षित किया कि जिसकी 'लागी' मार खाने के बाद भी नहीं छूटी, यह अलग बात है कि समय के साथ इसके आकर्षण में वैचारिकता भी शामिल हो गई, साथ ही सिनेमा को जानने और समझने के जिज्ञासा में भी इजाफ़ा हुआ। इसलिए शोध का सुअवसर प्राप्त होने पर मैंने

सिनेमाई शिल्प को ही लघु शोध का विषय बनाया। सिनेमा के माध्यम से किसी भी विषय को समग्रता, सूक्ष्मता और कलात्मकता से व्यक्त करने के लिए सिनेमाई शिल्प को समझना आवश्यक है। सिनेमाई शिल्प का जितनी कुशलता से प्रयोग किया जाएगा सिनेमा की प्रस्तुति उतनी ही प्रभावशाली होगी।

प्रस्तुत लघु-शोध प्रबंध में गुरुदत्त निर्देशित फिल्मों का शिल्पगत अध्ययन एवं विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। इसके अंतर्गत यह जानने और समझने का प्रयास किया गया है कि गुरुदत्त ने विषय की प्रस्तुति में सिनेमाई शिल्प के तत्वों का कहाँ और किस प्रकार प्रयोग किया है।

सिनेमा, कला एवं विज्ञान, कल्पना और यंत्र के समायोजन से विकसित ऐसी विधा है जिसमें समाज की कलायात्रा के विविध आयाम मौजूद हैं। संगीत, नृत्य, नाटक, चित्रकला, वास्तुकला, साहित्य सभी कलारूप इसमें शामिल हैं। अभिनय के माध्यम से कहने की कला नाटक ने कई सदियों पहले ही दे दी थी। नाटक में जिस प्रकार से सभी कलाओं का समायोजन है उसी प्रकार सिनेमा ने भी अपने शिल्प के विकास में चित्रकला, गीत-संगीत, वास्तुकला, अभिनय आदि गुणों से प्रेरित रहा है। आज हम जिसे सिनेमा के नाम से जानते हैं वह अत्याधुनिक तकनीक के विविध उपदानों से युक्त है। इस प्रकार यह कहाँ जा सकता है कि सिनेमा सेल्यूलाइड या टेप (सीडी) पर अंकित एक ऐसी अत्याधुनिक विधा है जो अन्य कलाओं के कलात्मक श्रेष्टतम तत्वों और गुणों को स्वयं में समायोजित करने के बावजूद अपनी अलग पहचान और शिल्प का निर्माण करता है। कैमरे द्वारा विषय को व्यष्टि और समष्टि में चित्रित करने की क्षमता, संपादन के माध्यम से स्थान और समय को आवश्यकतानुसार परिवर्तित करने की क्षमता, बैक ग्राउंड स्कोर के माध्यम से दृश्यों के भाव को प्रभावशाली तरीके से व्यक्त करने की क्षमता, ग्राफिक एवं एनीमेशन डिजाइन द्वारा काल्पनिक दृश्यों के निर्माण की क्षमता आदि सिनेमाई विशेषता अन्य कलाओं के तत्वों और गुणों को अपनी आवश्यकतानुसार पुन: परिभाषित करने का अधिकार प्रदान करता है। सिनेमाई शिल्प के विशिष्ट रूप के अंतर्गत पटकथा, अभिनय प्रस्तुति, सिनेमेट्रोग्राफी, प्रकाश प्रभाव, संपादन, साउंड डिजाइन, सेट व्यवस्था, गीत-संगीत-नृत्य प्रस्तुति, ग्राफिक-एनीमेशन डिजाइन आदि उपदानों को सिनेमाई दृष्टिकोण से अध्ययन करना आवश्यक है।

भारतीय सिनेमा के इतिहास में गुरुदत्त की फिल्में अपने बेहतरीन शिल्प के लिए जानी जाती हैं। आज भी गुरुदत्त निर्देशित फिल्में सिनेमाई शिल्प की दृष्टि से विशेष महत्व रखती है।

गुरुदत्त ने अपनी फिल्मों में कैमरे की गतिशीलता, प्रकाश-छाया का प्रभाव, लयबद्ध संपादन, मंच व्यवस्था, साउंड डिजाइन, गीत-नृत्य प्रस्तुति आदि सिनेमाई तत्वों का रचनात्मक प्रयोग किया है। इन फिल्मों की शिल्पगत श्रेष्ठता ही है कि आज भी सिनेमा के विद्यार्थियों के द्वारा अध्ययन की दृष्टि से उनकी फिल्में विषय सामाग्री के रूप में प्रयोग की जाती है।

गुरुदत्त की फिल्में शिल्प के साथ-साथ कथ्य की भी दृष्टि से उत्कृष्ट और प्रभावशाली हैं। गुरुदत्त निर्देशित प्रारम्भिक फिल्मों का कथ्य मुख्यत: अपराधिक पृष्ठभूमि पर आधारित है। बाद में इन्होंने सामाजिक एवं राजनैतिक परिवर्तनों से उभरे अमानवीय पक्षों को भी अपनी फिल्मों का विषय बनाया जिसमें काव्यात्मकता का बोध होता है। इस सफर के बीच हास्य-व्यंग का पड़ाव भी आता है। गुरुदत्त निर्देशित बाजी, जाल, आर-पार अपराधिक विषयों पर आधारित व्यावसायिक फिल्में हैं फिर भी इनमें तात्कालिक आपराधिक परिवेश और समाज में विकसित हो रहे अपराधिक संस्कृति को मनोरंजक तरीके से चित्रित किया गया है। 'मिस्टर एण्ड मिसेज 55' फिल्म के माध्यम से गुरुदत्त ने पहली बार सामाजिक मुद्दे को हास्य-व्यंग के रूप में प्रस्तुत किया है। 'प्यासा' उनकी सृजनात्मकता की उत्कृष्ठ प्रस्तुति है। यह एक कवि के संवेदनशील समाज के ढाँचे से संघर्ष की कहानी है जो दुनिया से निराश होकर आत्मनाश की ओर बढ़ता है किन्तु अंत में वह ऐसी नई दुनिया की तलाश में निकल पड़ता है जहाँ से उसे फिर कहीं और न जाना पड़े। 'कागज के फूल' फिल्मी दुनिया की अंदरूनी सच्चाई को बयाँ करती है। यह संवेदनशील नायक विजय के आत्मनाश की कहानी है। 'साहब बीबी और गुलाम' काव्यात्मक रूप में प्रस्तुत होती है। जिसकी नायिका छोटी बहू अपने स्वत्व की प्राप्ति के लिए सामंतशाही संस्कृति से संघर्ष करती हुई मृत्यु को प्राप्त करती है।

लघु शोध प्रबंध की सीमा में सभी फिल्मों पर विस्तृत अध्ययन और विश्लेषण करना संभव न होने के कारण सिनेमाई शिल्प की बहुआयामी और बहुकोणीय दृष्टि से दर्शाने वाली गुरुदत्त निर्देशित फिल्में बाजी, जाल, आर-पार, मिस्टर एण्ड मिसेज 55, प्यासा, कागज के फूल, साहब बीबी और गुलाम (अब्रार आल्वी द्वारा निर्देशित किन्तु गुरुदत्त द्वारा निर्मित एवं उनके शिल्प शैली से प्रभावित) को शिल्पगत अध्ययन एवं विश्लेषण का विषय बनाया गया है। गुरुदत्त की प्रारम्भिक फिल्में बाजी, जाल, आर-पार, मिस्टर एण्ड मिसेज 55 में सिनेमाई शिल्प के तत्व पाये जाते हैं किन्तु सिनेमाई शिल्प की श्रेष्टम कृति की दृष्टि से प्यासा, कागज के फूल, साहब

बीबी और गुलाम उत्कृष्ट फिल्में हैं। इन फिल्मों में सिनेमाई शिल्प की विषयगत विभिन्नता एवं प्रस्तुति की अलग-अलग रूप के चलते अध्ययन की दृष्टि से आवश्यक प्रतीत हुई जिनमें सिनेमाई शिल्प के तत्वों (पटकथा, अभिनय प्रस्तुति, सिनेमेटोग्राफी, संपादन, साउंड डिजाइन एवं पार्श्व संगीत, गीत-नृत्य प्रस्तुति, मंच व्यवस्था) के आलोक में इनका विस्तृत अध्ययन एवं विश्लेषण किया गया है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में व परिसीमा की फिल्मों-के शिल्पगत अध्ययन में यह ध्यान रखा गया है कि फिल्म का विषय अपने ऐतिहासिक संदर्भ और घटना से कैसे जुड़ा है। उसके यथार्थभूमि एवं द्वन्द्वात्मक कलात्मक अभिव्यक्ति की मांग क्या हो सकती है। और गुरुदत्त द्वारा प्रयोग किया शिल्प विषय के प्रस्तुतिकरण में कहाँ तक सफल रहा है। कला का शिल्प वह सौष्ठव है जिसके माध्यम से कला की कांति संप्रेषित होती है। यहाँ शिल्प परीक्षण एवं विवेचन के लिए कला के यथार्थ विश्लेषण दृष्टि को आधार बनाया गया है। जीवन की पुनर्रचना में फिल्मकार द्वारा प्रयुक्त शिल्प (यथा बिम्ब मनोविश्लेषण के टूल, मंच सज्जा, प्रकृतिक दृश्यों से लाक्षणिक सम्प्रेषण) की व्याख्या विश्लेषण में समकालीन जीवन के विविध पहलुओं का किस उच्चता तक प्रदर्शन हुआ इसे परखा गया है। समग्र: शिल्प की परख एवं व्याख्या के लिए जीवन यथार्थ की अंतर्वस्तु की पुन रचना ही प्रमुख प्रविधि मानक के रूप में प्रस्तुत की गई है।

यह शोध प्रबंध चार अध्यायों में विभाजित किया गया है। **प्रथम अध्याय** में सिनेमाई शिल्प की अवधारणा एवं तत्व को दर्शाया गया है साथ ही उसके तत्वों पटकथा, अभिनय प्रस्तुति, सिनेमेट्रोग्राफी, प्रकाश, संपादन, साउंड डिजाइन एवं पार्श्व संगीत, नृत्य-गीत-संगीत प्रस्तुति, सेट डिजाइन, ग्राफिक एवं एनीमेशन डिजाइन की क्रमबध्द तरीके से व्याख्या करते हुए उसकी प्रस्तुति के पक्ष को दर्शाया गया है।

द्वितीय अध्याय में गुरुदत्त के जीवन की चर्चा की गयी है। इसे गुरुदत्त का प्रारम्भिक जीवन और फिल्मों में आने के बाद गुरुदत्त का जीवन नाम के दो उपअध्यायों में विभाजित किया गया है। इसमें गुरुदत्त के सिनेमाई सृजन कार्य से जुड़ी घटना और प्रसंगों को विशेष महत्व दिया गया है।

तृतीय अध्याय में गुरुदत्त निर्देशित फिल्में बाजी, जाल, आर-पार, मिस्टर एण्ड मिसेज 55, कागज के फूल, साहब बीबी और गुलाम में निहित कथ्य-प्रसंग को विषय वस्तु और सामाजिक दृष्टिकोण को आधार बनाकर अध्ययन एवं विश्लेषण किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में प्यासा, कागज के फूल, साहब बीबी और गुलाम, मिस्टर एण्ड मिसेज 55, आर-पार, बाजी, जाल, के सिनेमाई शिल्प को विशेष रूप से पटकथा, सिनेमेटोग्राफी, प्रकाश प्रभाव, संपादन, साउंड डिजाइन, मंच व्यवस्था, गीत-नृत्य प्रस्तुति को आधार बना कर अध्ययन एवं विश्लेषण किया गया है।

इस लघु शोध प्रबंध को आकार देने एवं इस स्वरूप में प्रस्तुत करने में मेरे निर्देशक प्रो.सुरेश शर्मा का स्नेहिल मार्गदर्शन प्राप्त हुआ जिससे मुझे समुचित दिशा मिल सकी साथ ही मैं विभाग के सभी शिक्षकों डॉ.ओम प्रकाश भारती, विधु खरे, डॉ.सतीश पावड़े का आभारी हूँ जिनका समय-समय पर प्रोत्साहन एवं सहयोग मिलता रहा। मैं फिल्म संग्राहलय पुणे के अधिकारी एवं कर्मचारियों का आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने शोध संबंधित सामग्री के अध्ययन में सहयोग प्रदान किया। इस लघु शोध प्रबंध में सहयोग करने वाले अग्रज अश्विनी कुमार, प्रेमप्रकाश, अफसर हुसैन, राहुल एवं अपने मित्र अमरेन्द्र, रोहित, मनीष, रवीद्र, अंशु, गौरव, अमोल का विशेष आभार जिनके सहयोग के बिना शायद यह लघुशोध प्रबंध इस रूप में नहीं आ पाता।

उपसंहार

सभी कलाओं के विकास के साथ-साथ रिकॉर्डिंग मीडिया के विकास ने सिनेमाई शिल्प को नया आयाम दिया है। सिनेमाई शिल्प के माध्यम से साधारण सी बात को भी सृजनात्मक तरीके से व्यक्त करके कला की नई ऊँचाइयों को छूआ जा सकता है। वर्तमान समय में कल्पना से परे अमूर्त अनुभूतियों को मूर्त रूप देने में सिनेमाई शिल्प को सफलता प्राप्त हुई है। सिनेमाई शिल्प के माध्यम से अपनी अनुभूतियों को सहज रूप में व्यक्त करने की क्षमता के कारण ही आज सिनेमा एक विकसित कला के रूप में मनोरंजन और ज्ञान का सशक्त माध्यम बन गया है। सिनेमाई शिल्प की विशेषता का ही परिणाम है कि आज सभी कलाएं सिनेमाई शिल्प के विकास में अपना बहुमूल्य योगदान दे रही हैं। वर्तमान समय में अधिकांश निर्देशक सिनेमाई शिल्प का उपयोग केवल फूहड़ मनोरंजन द्वारा पैसा उगाने के दृष्टिकोण से कर रहे हैं। यदि हम सिने इतिहास पर नज़र डालें तो पाते हैं इसका अतीत अपनी कलात्मक प्रस्तुति के लिए ग्रहणीय और अनुकरणीय है ।

सिनेमाई शिल्प अपने प्रारंभ से ही विषयवस्तु को सुंदर एवं प्रभावपूर्ण बनाने में सफल रहा है। सिनेमाई शिल्प के अंतर्गत पटकथा, अभिनय प्रस्तुति, मीज-एन-सीन, छायांकन, संपादन, साउंड डिजाइन एवं पार्श्व संगीत, सेट व्यवस्था, रूप एवं वस्त्र सज्जा, एनीमेशन एवं विजुअल इफेक्ट आदि सिनेमाई तत्वों का कलात्मक समायोजन विषय वस्तु की सशक्त अभिव्यक्ति के रूप में सामने आती है। कुछ फिल्म निर्देशकों को छोड़ दिया जाए तो अधिकतर फिल्म निर्देशकों ने सिनेमाई शिल्प का सतही प्रस्तुतीकरण किया है। सिनेमाई शिल्प की कलात्मक अभिव्यक्ति की दृष्टि से बिंबों और प्रतिकों का विषय वस्तु के संदर्भ में रचनात्मक एवं सृजनात्मक प्रयोग करके अमूर्त अनुभूतिओं को मूर्त रूप में प्रभावशाली तरीके से प्रस्तुत किया जाता है। सिनेमाई शिल्प अपने प्रारंभिक काल से ही कलाकारों की अनुभूतियों को प्रमुखता से मुखरित करने एवं विषय वस्तु को प्रतीकों और बिंबों की सहायता से चित्रित एवं छायांकित करने में सफल रहा है।

'प्यासा' द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद बनी नवयथार्थवादी फिल्मों में रोमांटिसिज्म की सर्वाधिक महत्वपूर्ण अभिव्यक्ति है। 'प्यासा' में गुरुदत्त ने बिंब का विभिन्न रूपाकारों से भिन्न-भिन्न स्तरों पर प्रयोग कर उसे एक सशक्त प्रतीक तक पहुँचा दिया है। इसमें चरित्रों की अंतर्मुखी अनुभूति को कैमरेकी गतिशीलता, प्रकाश और छाया का प्रतिकात्मक प्रयोग, लयबद्ध संपादन,

अर्थपूर्ण शब्दों और भावपूर्ण संगीत के माध्यम से निर्मित प्रतीक व बिंब के रूप में प्रस्तुत किया गया है। गुरुदत्त गीतों का प्रयोग कथावस्तु को विस्तार देने और कहानी को आगे ले जाने में करते हैं। प्रतिकों और बिंबों के माध्यम से नेहरू के विकासवाद और गांधी के समाजवाद को आधार मानकर भारतीय समाज का निर्माण करने वालों के सामने सवाल रखते हैं , 'जिन्हें हिन्द पर नाज है वह कहाँ है...'। प्यासा शिल्पगत दृष्टि से प्रभावशाली होने के बावजूद पटकथा के रूप में अनगढ़ फिल्म है, कहानी में कई दृश्यों के बाद ठहराव आ जाता है। लेकिन प्यासा फिल्म में कई ऐसे दृश्य हैं जो पटकथा के आधार पर बहुत महत्व न रखते हुए भी चरित्र की संवेदनशीलता की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। 'प्यासा' भारतीय सिनेमा में सिनेमाई शिल्प का अनुपम उदाहरण है।

'कागज के फूल' सिनेमास्कोप पर बनी भारत की पहली फिल्म है। शॉट फ्रेमिंग, कैमरा मूवमेंट, लाइटिंग (प्रकाश और छाया प्रभाव), लंबे दृश्यों की लयबद्ध शूटिंग एवं संपादन के माध्यम से प्रतीक और बिंबों की प्रस्तुति में यह फिल्म अद्भुत है। 'कागज के फूल' चरित्रों की संवेदनाओं को व्यक्त करने के लिए निर्मित बिंबों में सिनेमेट्रोग्राफी और प्रकाश के कलात्मक प्रयोग की दृष्टि से प्रभावशाली है, किन्तु फिल्म से निर्देशक क्या कहना चाह रहा है, यह स्पष्ट नहीं हो पाता। कागज के फूल शीर्षक से प्रतीक रूप में स्पष्ट होता है कि जिस प्रकार कागज के फूल वास्तविक नहीं होते उसी प्रकार फिल्मी दुनिया में लोकप्रियता, प्रसिद्धि यह सभी चीजें दिखावटी हैं वास्तविक नहीं। शायद निर्देशक इस फिल्म के माध्यम से कहना चाह रहा है, 'देखी जमाने की यारी बिछड़े सभी बारी-बारी'।

उत्तम अभिनय, संवाद, शानदार सेट व्यवस्था, बंगाल में अंग्रेजी शासन काल में स्थित जमींदारी व्यवस्था का यथार्थपूर्ण वातावरण निर्माण होने के कारण 'साहब बीबी और गुलाम' अपने दृश्यों से जीवंत हो उठता है। फिल्म के सृजनात्मक निर्माण में सिनेमाई शिल्प का प्रयोग चरित्रों के परिप्रेक्ष्य के रूप में किया गया है। निर्देशक फिल्म में छोटी बहू को भूतनाथ के परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करता है। जिसके तहत कैमरा भूतनाथ की नजरों का प्रतीक बन जाता है। वही पर हवेली में होनेवाले गीत-नृत्य में प्रकाश व्यवस्था दर्शकों की मानसिक स्थिति के अनुसार किया गया है। जिसमें मुख्य नर्तकी पर प्रकाश होता है। दृश्य के वातावरण को भाव के स्तर पर प्रभावशाली तरीके से व्यक्त करने के लिए छायांकन, प्रकाश योजना, सौन्दर्यपूर्ण वस्त्र, लयबद्ध संपादन आदि सिनेमाई शिल्प के तत्वों का सृजनात्मक तरीके से समायोजन किया गया है।

सामंतशाही संस्कृति के बिखरने कीपूर्व सूचना को निर्देशक ने प्रतीकों के माध्यम से प्रस्तुत किया है जिसमे पार्श्व से सुनाई देती छोटी बहू और घड़ी बाबू के हँसने की आवाज के साथ लॉन्ग शॉट में अँधेरी रात में डूबी हुई हवेली के मोंताज का प्रयोग प्रतीक के रूप में हुआ है।

मिस्टर एण्ड मिसेज 55' अपनी लयबद्ध और काव्यमय शैली के कारण उत्तम फिल्म के रूप में प्रस्तुत होती है। लॉन्ग ट्रेंकिंग शॉट, कलात्मक तरीके से लिए गए क्लोज-अप, प्रकाश और छाया का उचित प्रयोग, उत्तम संवाद, कहानी के प्लॉट में दृश्यों का उचित समायोजन, कर्णप्रिय संगीत, मानसिक आधार पर प्रत्येक घटना में उत्पन्न हास्य आदि फिल्म की कलात्मक प्रस्तुति में सहायक होते हैं। इस फिल्म में गुरुदत्त की रचनात्मकता के उच्चतम शिखर 'प्यासा' की प्रारम्भिक झलक मिलती है, किन्तु यह फिल्म कथावस्तु और उसकी कलात्मक प्रस्तुति की दृष्टि से प्यासा, कागज के फूल और साहब बीबी और गुलाम के कलात्मक स्तर को छू नहीं पाती।

गुरुदत्त ने आर-पार, बाजी, जाल अपराधी विषयों पर आधारित फिल्मों में कथ्य की प्रस्तुतीकरण में सिनेमाई शिल्प की दृष्टि से कोई विशेष रचनात्मक प्रयोग नहीं किया है। अन्य फिल्मों की तरह इन फिल्मों में भी गीत-नृत्य के फिल्मांकन में उन्होंने कई रचनात्मक प्रयोग किए जिसके कारण उनकी प्रारंभिक फिल्में विषय वस्तु की रचनात्मक प्रस्तुति की अपेक्षा अपने गीत-संगीत प्रस्तुतीकरण के लिए जानी जाती है।गुरुदत्त ने इन फिल्मों में सिनेमेटोग्राफी, प्रकाश योजना (प्रकाश-छाया प्रभाव), लयबद्ध संपादन, प्रभावशाली साउंड डिजाइन एवं पार्श्व संगीत, आकर्षक नृत्य-गीत प्रस्तुति, सौन्दर्यपूर्ण रूपसज्जा एवं वस्त्रसज्जा, भव्य सेट व्यवस्था आदि सिनेमाई तत्वों के सृजनात्मक प्रयोग से इनकी विषयवस्तु के साथ न्याय किया है।

गुरुदत्त पचास के दशक के ऐसे निर्देशक हैं जिन्होंने विषय की प्रस्तुति में सिनेमाई शिल्प के रचनात्मक प्रयोग के अनेक कीर्तिमान स्थापित किए। जिनकी फिल्में सिनेमाई शिल्प की दृष्टि से उत्कृष्ट काव्यात्मक प्रस्तुति है। गुरुदत्त ने अपनी फिल्मों में कैमरे की गतिशीलता, दृश्य में गहराई, प्रकाश और छाया का प्रभाव, लयबद्ध संपादन, प्रभावपूर्ण साउंड एवं पार्श्व संगीत, नृत्य,गीत-संगीत की प्रस्तुति, भव्य सेट व्यवस्था आदि सिनेमाई तत्वों का रचनात्मक प्रयोग कर प्रतीकों और बिंबों के रूप में शिल्प की काव्यात्मकता को दृश्य और श्रव्य माध्यम से प्रस्तुत किया है।

एक ओर जहां गुरुदत्त की फिल्मों ने सिनेमाई शिल्प के कलात्मक विकास में अपना योगदान दिया है वहीं आज बाजारवाद के दौर में धन कमाने की लालसा के चलते सिनेमाई शिल्प का उपयोग मात्र फूहड़ मनोरंजन तक रह गया है। आज की फिल्मों में गीत-संगीत-नृत्य का प्रयोग केवल उत्तेजना पैदा करने वाले आयटम सॉन्ग के रूप में हो रहा है। गुरुदत्त की फिल्मों में गीत-संगीत-नृत्य का प्रयोग चरित्र की अंतर्मुखी अनुभूतियों को व्यक्त करने एवं कथा को रचनात्मक ऊंचाई प्रदान करने के लिए होता था। आज की फिल्मों ने मानवीय संवेदना को संप्रेषित करने के लिए सिनेमाई शिल्प की मार्मिकता को नहीं बल्कि उत्तेजना पैदा करने वाले भड़काउ रूप को आत्मसात कर लिया है।

बाजारवाद और फूहड़ मनोरंजन ने मानवीय संवेदना का गला घोट दिया है। सिनेमाई अभिव्यक्ति में सच्ची श्रद्धा रखने वाले फिल्म निर्देशकों को सिनेमाई शिल्प के कलात्मक स्वरूप को पहचानना होगा। मानवीय संवेदना एवं समाज के ज्वलंत प्रश्नों की रचनात्मक अभिव्यक्ति में अपना योगदान देना होगा। पिछले कुछ वर्षों में नये विषयों के साथ सिनेमाई शिल्प की कलात्मक प्रस्तुति की समझ रखने वाले निर्देशकों ने सिनेमाई शिल्प की प्रस्तुति में नए आयाम पाने का प्रयास किया है। जिनकी सराहना की जानी चाहिए, इन्होंने मानवीय संवेदनाओं और सामाजिक समस्याओं को सिनेमाई शिल्प के माध्यम से मुखरित किया है।